UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : History
Research Link - 163, Vol - XVI (8), October - 2017, Page No. 134-135
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

प्लासी की लड़ाई सन् 1757 ई. में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में प्लासी की लड़ाई सन् 1757 ई. में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। प्लासी की लड़ाई की गणना भारत की निर्णायक लड़ाइयों में की जाती है। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ.आर.सी.मजूमदार के अनुसान, ''प्लासी की लड़ाई एक मामूली झड़प से अधिक नहीं थी, किन्तु इसके परिणाम विश्व की अनेक महान लड़ायों से अधिक महत्वपूर्ण थे। इसने अंग्रेजों के लिए बंगाल विजय एवं अंततः समस्त भारत की विजय का मार्ग प्रशस्त किया।'' अतः प्लासी की लड़ाई से एक युग का अंत हुआ तथा एक नये युग का आरंभ हुआ। कर्नल जी.बी. मालेसन का यह विचार बिल्कुल सही है कि, कोई ऐसी लड़ाई नहीं हुई, जिसके परिणाम इतने विशाल, तात्कालिक और स्थायी निकले हों।

डॉ.प्रकाश चन्द्र बड़वाया

प्रस्तावना :

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना बंगाल से हुई। सन् 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य से कई प्रांत स्वतंत्र होने लग गए। बंगाल का नवाब मुर्शद कुली खाँ (Murshid Quil Khan, 1705–1727 ई.) शुजाउद्दीन (Suhja-ud-Din, 1727-1740 ई.), सिराजुद्दौला (Siraj-ud-Daula, 1756-57 ई.) बना। सिराजुद्दौला का सिहांसन पर बैठने शीघ्र के बाद अंग्रेजों से झगड़ा हो गया। अतः अंग्रेजों और सिराजुद्दौला के बीच 23 जून 1757 ई. को प्लासी की लड़ाई हुई। इस युद्ध में अंग्रेज विजय हुए। इस लड़ाई का भारतीय इतिहास पर बहुत दूरगामी प्रभाव पडे। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ.प्रकाश चन्द्र के अनुसार, ''राजनीतिक दृष्टि से यह लड़ाई विश्व इतिहास की महत्पूर्ण लडाइयों में से एक थी। इसमें अंग्रेजों के लिए बंगाल विजय का मार्ग खोला, जहाँ से उन्होंने एक शताब्दी के अन्दर सम्पूर्ण भारत को विजय कर लिया।''(1)

साथ ही प्रसिद्ध इतिहासकार पी. एल. चौपडा, बी. एन. पुरी, एम. एन. राय तथा ए.सी. प्रधान का यह कहना पूर्णत ठीक है कि, ''प्लासी की लड़ाई के बंगाल एवं अंतिम रूप से सम्पूर्ण भारत की गुलामी की जंजीरों में जकड़ लिया। विदेशी व्यापारी देश के स्चाली बन गए तथा एक अन्धकारमयी रात्रि का आरम्भ हुआ।''(2)

सन् 1757 ई. में अंग्रेजों तथा बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के मध्य प्लासी की लड़ाई हुई, जिसके मुख्य कारणों में सिराजुद्दौला का विवादपूर्ण उत्तराधिकार एक महत्त्वपूर्ण कारण सिद्ध हुआ। बंगाल के नवाब अलावर्दी खां का कोई पुत्र नहीं था, उसकी तीन बेटियाँ थी। उसने मरने से पहले अपनी छोटी बेटी के पुत्र सिराजुद्दौला को सन् 1756 में उत्तरधिकारी बनाया था, परन्तु सिराजुद्दौला के दुश्मनों ने अलीवर्दी खान के एक नाती (लडकी का पुत्र) शौकत अली को उसने विरूद्ध खड़ा कर दिया। साथ ही अंग्रेजों ने भी बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप करते हुए शौकत अली का समर्थन करना प्रारंभ कर दिया। अतः अंग्रेजों और नवाब सिराजुद्दौला के संबन्धों में दरार उत्पन्न हो गई। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. प्रकाश चन्द्र के अनुसार, ''अंग्रेज जिनकी नजर काफी समय से बंगाल के धनी प्रदेश पर लगी थी। नवाब को सत्ता का उल्लंघन करने को प्रोत्साहित हुए।''(3) साथ ही प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जी. एस. छाबड़ा के शब्दों में, ''सिराजुद्दौला के लिए बंगाल की गद्दी कोई फूलों की सेज नही थी।''(4)

इसके अलावा अंग्रेज, नवाब का उचित सम्मान भी नहीं करते थे। कलकत्ता स्थित कासिम बाजार के फ्रैन्च मुखिया जीन ला (Jean Law) के अनुसार, ''वे (अंग्रेज) सिराजुद्दौला के दरबार में कभी भी उपस्थित नहीं होते थे, अपितु जानबुझकर उससे कोई बात नहीं करते थे। कई बार तो उन्होंने अपनी कासिम बाजार की फैक्टरी में उसे प्रवेश होने से भी रोक दिया।''(5)

इसके साथ ही अंग्रेजों ने कलकत्ता की किलेबंदी करनी शुरू कर दी। सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों को किलेबंदी रोकने का आदेश दिया, लेकिन अंग्रेजों ने उसके आदेश का पालन करने से इंकार कर दिया। इसके बाद नवाब सिराजुद्दौला का कथन था कि– ''मैं महान अल्लाह की सौगंध खाता हूँ कि यदि अंग्रेजों ने अपनी खाइयों को न भरा, अपने किलों को नष्ट नहीं किया तथा उन व्यापारिक शर्तों पर व्यापार न किया, जो नवाब जफर खॉ के समय में प्रचलित थी, मैं उनकी कोई बात नहीं सुनूंगा तथा उन्हें सम्पूर्ण रूप से अपने देश को निकाल दूंगा''।(6)

इसके साथ ही 20 जून 1756 ई. को काल कोठरी (ब्लेक होल) की घटना हुई, जिसमें सिराजुद्दौला ने कलकत्ता में 146 अंग्रेजों को गिरफ्तार करके एक 18 फीट लम्बे तथा 14 फीट 10

सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग), पी.जी.गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, सेक्टर-11, चण्डीगढ़

इंच चौड़े एक हॉल मे बंद कर दिया था, जिसमें 123 व्यक्ति की मृत्यु हो गई और 23 ही बचे थे, लेकिन आधुनिक इतिहासकार इस घटना को सत्य नहीं मानते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जी. एस. छाबडा के अनुसार, ''समकालीन अंग्रेजों ने नवाब को बदनाम करने के लिए इसका खूब लाभ उठाया और इसी आधार पर जनमत को अपनी ओर करने का प्रयास किया, क्योंकि अब वे शीघ्र ही आक्रमण युद्ध आरंभ करने की तैयारी में थे''।[7]

एक अंग्रेज इतिहासकार राबर्टस के कथानुसार, ''ऐसा प्रतीत होता है कि नवाब इस भयानक घटना के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं था, परन्तु उसने अपराधियों को दण्ड देने की कोई कोशिश न की।''[8]

इसके बाद जनवरी 1757 में अंग्रेजों ने कलकत्ता पर फिर से अधिकार कर लिया तथा साथ ही मार्च 1757 मे चंद्रपुर पर आक्रमण करके अपने अधिकार मे ले लिया। इसके बाद क्लाईव ने सिराजुद्दौला को गद्दी से उतार कर मीर जाकर के साथ पाठ–गांठ करना शुरू कर दिया।

उस समय क्लाइव ने ओर्म (orme) को स्वयं लिखा कि वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए छलकपट, धोखे, षड्यंत्र आदि से काम लेगा।[9]

इसके बाद क्लाइव ने सिराजुद्दौला पर फ्रांसिसीयों से सांठ–गांठ करने का आरोप लगाया और नवाब के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने बंगाल की ओर कूच कर दिया। उधर सिराजुद्दौला भी अपनी सेना लेकर प्लासी के मैदान में आ गया। 23 जून 1757 ई. को दोनों सेनाओं के बीच युद्ध हुआ, लेकिन सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर के धोखा देने कारण वह युद्ध में हार गया तथा अंग्रेज विजय हुए। प्लासी की लड़ाई पर डी.सी वर्मा ने कहा है, ''प्लासी की लड़ाई विश्वासघात था, न कि शस्त्रों ने फैसला किया।''[10]

प्लासी की लड़ाई की गणना भारत की निर्णायक लड़ाइयों में की जाती है। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. आर.सी. मजूमदार के अनुसार, ''प्लासी की लड़ाई एक मामूली झड़प से अधिक नहीं थी, किन्तु इसके परिणाम विश्व की अनेक महान लड़ाइयों से अधिक महत्वपूर्ण थे। इसने अंग्रेजों के लिए बंगाल विजय एवं अंततः समस्त भारत की विजय का मार्ग प्रशस्त किया।[11]

उपर्युक्त दिवरण से स्पष्ट है कि प्लासी की लड़ाई से एक युग का अंत हुआ तथा एक नये युग का आरंभ हुआ। अतः कर्नल जी. बी. मालेसन का यह विचार बिलकुल उचित है कि, ''कोई ऐसी लड़ाई नहीं हुई, जिसके परिणाम इतने विशाल, तात्कालिक तथा स्थायी निकले हो।[12]

संदर्भ :

(1) *Politically this battle is one of the most important battles in the world history even. It opened the road for British Conquest of Bengal where from they Conquered the whole of India within a Century only- Dr. Prakash Chandra, Modern India: 1757-1947, Delhi, 1999 P. 15.*

(2) *The battle of Plessey fastened the shackles of slavery on Bengal and ultimately on the whole of India. The foreign merchants become masters of the country and a night of eternal gloom followed," P.N Chopra, B.N. puri, M.N. Das and A.C. Pradhan, A New Advanced History OF India, New Delhi: 1996, P.470.*

(3) *The English who had already fixed their even on the rich land of Bengal were encouraged to defy the authority of the Nawab." Dr. Prakash Chandra, Modern India: 1757-1947, Delhi, 1999, P.11.*

(4) *For Siraj-ud-Daula however the throne of Bengal was not a bed of roses"-Dr. G.S. Chhabra, Advanced Study in the History of Modern India, New Delhi, 2005, Vol. I, P. 132.*

(5) *"They (British) never addressed themselves to Siraj-ud-Daula for their business in the Darbar but on the Contrary, avoided all communication with him. On certain accasions they refused him admission to their factory at kasim Bazar." M. Jean Law.*

(6) *I Swear by the Great God that unless the English Consent to fill up their diches, raze their fortification and trade upon the same trems as they did in the time of Jafar Khan. I will not hear anything on their behalf and will expel them totally out of my Country-Nawab Siraj-ud-Daula, cited in, History of modern India, S.C Ray Choudhary Delhi: 1988, p.97.*

(7) *"The Contemporary British made a capital of it to malign the Nawab and win over the public Support for a war of aggresion which they were about to wage" Dr. G.S. Chhabra, Advanced Study in the History of Modern India, New Delhi, 2005, Vol I, p. 135.*

(8) *"The Nawab does not appear to have been personally for this ghasily deed------ but he never attempted to punish the perpetratore" P.E. Roberts: History of British India, P.134.*

(9) *"Clive wrote to arme that he intended to employ "tricks Chicanery intrigue and the Lord knows what in order to gain his object" Quoted by Ishwari Parasad India in the Eighteenth Century, P.92.*

(10) *"In the battle of plassey, treason and not arms made the deasion- D.C. Verma, Plassey to Buxar p. 50.*

(11) *"The battle of Plasey was hardly more than a mere Skirmish but its result was more important than that of many of the greatest battles of the world. It paved the way of British conquest of Bengal and eventually of the whole of India"- Dr. D.C. Majumdar an advanced History of India, New Delhi, 2054, p.657.*

(12) *There never was a battle in which the consequences were so vast, so immediate and so Permanent"- Col. G.B. Malleson, The Decisive Battle of India, New Delhi: 1965, P.18.*

संदर्भ ग्रन्थ :

(1) *Chandra, Dr. Prakash (1999) : Modern India : 1757-1947, Delhi.* ***(2)*** *Chopra, P.N. ; Puri, B.N. ; Das, M.N. and Pradhan, A.C. (1996) : A New Advanced History of India. New Delhi.* ***(3)*** *Chhabra, Dr. G.S. (2005) : Advanced Study in the History of Modern India, New Delhi.* ***(4)*** *Chaudhary, S.C Ray (1988) : History of Modern India, Delhi.* ***(5)*** *Chand, Dr. Tara (1990) : History of the Freedom movement in India, New Delhi.* ***(6)*** *Prasad, Dr. B. (1981) : Bondage and Freedom : A History of Modern India, New Delhi.* ***(7)*** *Chaudhuri, Dr. K.C. (1983) : History of Modern India, Calcutta.* ***(8)*** *Basu, B.D. (2001) : Rise of the Christian power in India, Delhi.* ***(9)*** *Prasad, Dr. Ishwari and Subedar, S.K. (1984) : History of Modern India, Allahabad.* ***(10)*** *Majumdar, Dr. R.C. (2004) : An Advanced History of India New Delhi.* ***(11)*** *Sharma, Dr. L.P. (1990) : History of Modern India, Delhi.* ***(12)*** *Malleson, Col. G.B. (1965) : The Decisive Battles of India. New Delhi.* ***(13)*** *Sen, Dr. S.N. (1997) : History of the Freedom Movement in India, New Delhi.* ***(14)*** *Sodhi, Prof. Manjeet Singh (2012) : History of India, Jalandhar.*

❁❁